643
H 162 p
MICRO FILM

राष्ट्रीय अभिलेखागार पुस्तकालय
NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
भारत सरकार
Government of India
नई दिल्ली
New Delhi

1298/1981

आह्वानांक Call No.
अवाप्ति सं० Acc. No. 643

891.431

बन्दे मातरम् ।

नई कजली मिरजापुरी ।

राष्ट्रीय बहार

उर्फ

भारत की पुकार

रचयिता:—अट्टन कवि

प्रकाशक तथा संग्रह कर्ता ठाकुर प्रसाद सरजू प्रसाद मकरीखोह मिरजापुर ।

प्रथम वार ३०००] सन् १९३० [मूल्य)॥

खिचरी समाचार प्रेस, मिरजापुर ।

RECEIVED. 30 MAR 1931

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
No 643
Date 16.12.71
GOVT. OF INDIA

कजली । नं० १

जुल्म करला विदेशी जुल्म कारी रे दइयाँ ॥ टेक ॥

बेगि आवो जदुराय, दुःख सहा नहिं जाय; जुल्म करला विदेशी जुल्म कारी रे दइयां ॥ रहीं दमन से दबाय, आय गयो है भुलाय, कर रहेत्राहि त्राहि नर नारी रे दइयाँ ॥ जु० ॥ गिरफ्तारियां सजाय देत गोलियाँ चलाय, कैसे कहूँ मुँह बाय कष्टसारी रे दइयां ॥ जुल्म० ॥ टेर सुनों चित्तलाय, धाय कीजिये उपाय, करो हिन्द पै सहाय चक्रधारी रे दइयां । ॥ जुल्म० ॥ दुष्ट दुर मति नशाय, प्रभू दीजिए बहाय, राधे श्याम जी स्वराज्य दो निहारी रे दइयाँ ॥ जुल्म० ॥

कजली नं० २

सुनों सइयां समझदार, मानों बतिया हमार, हमैं धोतियां लिआवो खास खद्दर बलमू ॥ टेक ॥ काता चरखा का सूत बीना रहै मजबूत, फेर रंगहो सफेद जैसे बद्दर बलमू ॥ हमैं ॥ मानचेस्टर से जो आवै, लंका शायर जो बनावै; यहीं पहिने से होत रोग लंद्दर बलमू ॥ हमै० ॥ देशी वस्त्र है पवित्र ऐसे ध्यान धरो नित्त, यही देश के बिनो भी चारु चद्दर बलमू ॥ हमै० ॥ अट्टन भट पट न कोई, एमे देश सुखी होई, यही ढंग से उतारो सर के भद्दर बलमू ॥ हमै० ॥

कजली नं० ३ ।

छोड़ो मिही बस्त्र विदेशी, पिया अब खद्दर धारो ना ॥ टे० ॥
चरखो से चर चित्त चारो बल. जाओ फारो ना ॥ छोड़ो ॥
पूजा पाठ करन काबिल नहिं, धर्म बिचारो ना ॥ छोड़ो ॥
अरबो दरबो जात बिलायत, नेक निहारो ना ॥ छोड़ो० ॥
अछूत आज स्वराज्य धरा बा; तन मन वारो ना० ॥ छोड़ो० ॥

कजली नं० ४ ।

पहिनः बहुत दिन मीहीन, तरह तरह नमस्तीन, अब खद्दर क सिआयो नीक नरखा बलमू ॥ टेक० ॥ भला अब से बिचार, सर पर गाँधी टोपी धार, करो देश के स्वतन्त्र होय हरखा बलमू ॥ अब ॥ गैर चीज न खरीद, बल्कि हो जाना शहीद. अब समय आय गवा वीर परखा बलमू । ॥ अब ॥ छोड़ो गैर की गुलामी' भरो गाँधी जी की हामी, आप क्यों न छुड़ाओ मुँह का करखा बलमू ॥ अब ॥ चट अट से कहीं, संगे हमहूँ रही, फेरि काती आओ मिल जुल चरखा बलमू ॥

कजली नं० ५ ।

रोज पिय थ शराब दगाबाज बलमू ॥ टेक ॥ सारे देश में दमन, तोहै सूझी बा चमन, रोज पियथ शराब दगाबाज बलमू । पहरा दे रहे बेचारे, बपुरे देश के दुलारे; फेरि चोरी चोरी करो आपन काज बलमू ॥ रोज० ॥ देत देत मोहिं

रकम होत जिगर पर जखम यही बतिया पर बाटी हम ना-
राज बलमू ॥ रोज पिय थ० ॥ सड़े पानी पर मरो; काम
एक न करो, अब कहँवाँ से आई घिव अनाज बलमू ॥ रोज० ॥
आजु अट्टन कहेन बीच सभा में रहेन यहो मतलब से रुका
बा सुराज बलमू ॥ रोज पिय थ० ॥

कजली नं० ६ ।

राजा छोड़ दे शराब गांजा भंग बलमू ॥ टेक ॥ दशा
देश की निहार भयौ वाकही भिखार राजा छोड़ दे शराब
गाँजा भंग बलमू ॥ रोज रोज सिंधु पार धन जात बे शुमार
हर शाल हाल चाल बेदरंग बलमू ॥ राजा छोड़० ॥ एक पौएड
कही होय, बोस पौंड जाय खोय, रोय रोय होय पड़ी तोहै
तंग बलमू ॥ राजा० ॥ होश करो नशेबाज मानों बात की
लिहाज प्यारे तोड़ दे नशे से लसलंग बलमू ॥ राजा० ॥
अट्टन कहै बार बार सुख सौगुनों सकार आप हो कोष वार
रहो चंग बलमू ॥

कजली नं० ७ ।

मुझे है यही देखना जान हमैं कब तलक सतावलियु ॥ टेक ॥
उरबाना लै जेल जुनरबी जिगर कपाँबलियु ॥ मुझे० ॥
माल जाल करि चाल घसीटियु, धता बतावलियु ॥ मुझे० ॥
गोली गोला बम्म मारि के, रोब जमाबलियु ॥ मुझे० ॥
अट्टन आशिक अड़ा अड़ीला मुसुक कसावलियु ॥ मुझे० ॥

कजली नं० ८ ।

तिजारत लिहियु छीन दिल जान हमै बेकूफ बतावलियु ॥ टेक ॥ पेच पेंच से रुपया खिचियु, अब दहसावलियु । तिजारत० ॥ देन स्वराज्य के बदले, उलटा दफा लगावलियु ॥ तिजा० ॥ तरह तरह के माल भेज मन, चले फसावलियु ॥ तिजा० ॥ अट्टन शूर समझि गो सबरे, देश नशावलियु । ॥ तिजारत लिहियु छीन० ॥

कजली नं० ९ ।

तेरे शान पै किशान जेल जायँगे रे सावलिया ॥ टेक ॥ माल खाइयु बहुत रोज' लगा धीरे २ खोज' अब लगोट बन्द बीर गोली खायँगे रे सावलिया ॥ तेरे० ॥ भारत भूमि है हमारी, मान लन्दनी दुलारी, मर मिटैगे नहीं दमन से दबाय रे सांवलिया ॥ तेरे० ॥ काम करी मरी हम, तोहै देई थ रकम ए जखम, नहीं हिन्दमें समायँ गे रे सांवलिया । तेरे० । गुरू गान्धी के मन्त्र, जप होयँगे स्वतंत्र अट्टराम' नाम सुजस कमायँगे रे सांवलिया ॥ तेरे शान पै किशान० ॥

कजली न० १० ।

गोइयाँ रजवां हमार बे शहूर या' नशे में रहै चूर वा ना ॥ ॥ टेक० ॥ छोड़त नाही शराब सर बउला' ऐसे मोसे संग रहै बड़ी दूर बा नशे में रहै चूर बा ना ॥ यही बदे बपुरे जात

बाटेनि जेहल, ई तो दोनों अंखिया के शूर बा नशे० ॥ चोरी से रतियां चोर दुकनदरवा, दइ जाथ वोहूं महा कूर बा नशे में० ॥ कई बार बरजि बरजि हम हारी, एके यही अट्टन सरूर बा नशे में रहै चूर बा ना ।

कजली ११ ।

पीके ताड़ी बको गारी बे शहूर बलमू ॥ टेक ॥ कैसे देई हम निकार, हौ न बिअहा भतार, पीके ताड़ी बको गारी बे शहूर बलमू ॥ बिगड़ा ऐसन जवान, तोहै लभनी 'लोभान' चार जने बीच कहब हम जरूर बलमू ॥ पी के० ॥ बाय: ऐसन बे शरम, करः करम कुकरम घरे आय तेपर करो मगरूर बलमू ॥ पी के० ॥ रोग ऐसन बा भवा, लागै एको न दवा यहो कारन से परि ग नशूर बलमू ॥ पी के० ॥ अट्टन कहत रहैन—आज, जब होइ जाये सुराज लग जाई तोरे मोंहे काला धूर बलमू ॥ पी के० ॥

कजली १२ ।

नहीं सुनाई हो सकती सरकार में अन्याई दरबार में ना । । टेक । आशा भला न इनसे करना अपनी जारी रखो धरना डरना नहीं नाम ना होगा हरगिज हार में । अन्याई० । जरमन किया चढ़ाई भारी तब हिन्दुन से बात यह हारी देंगे स्वराज्य बच जाऊँ जो जरमन वार में । अन्याई० । स्वराज्य

की बारी जब आई डायरने गोली चलवाई साफ इनकार किया है देखो जी इकरार में ॥ अन्यायी० ॥ गाँजा भंग चरस बेचवावै मदिरा पीवैं और पिआवैं मना करै तो भेजै जेल उसी के खार में। अन्यायी०। ऐसा ज़ुल्म हिन्द में ढावै लाखों गौ को नित कटवावै लाभ उठावै उसके चमड़े से ब्योपार में। अन्यायी०। अपना देश स्वतंत्र बनाऊँ चरखा घर घर में चलवाऊँ बन कर विजयी मुँह दिखलाऊँ इस संसार में। अन्यायी०। चला कर सत्त धर्म के सेगे दुशमन को डिफिट हम देंगे लेंगे स्वराज्य अट्टन कहता है हजार में अन्यायी दरबार में ना॥

कजली १३।

अपने धर्म के खंजर उठा लीजिए तान के रन भूमी में आन के ना। टेक। बनों नहीं बीर के बच्चे कायर सर पर खड़ा हो जालिम डायर फायर होता हो तो डरो नहीं तुम जान के॥ रन भूमि० ॥ प्रतिज्ञा पर रहो समर के बैरी के सन्मुख मुँह करके पीछे पैर हटाना खिलाफ है यहशान के। रन भूमि०। कपड़ा सारा देव जलाई जितना गैर मुल्क से आई भाई बन जाओ तू बच्चा अब इन्सान के। रन भूमि०। मन से माँस व मदिरा त्यागो हरदम बुरे काम से भागो, जागो कार बार सब उठा देवो बेइमान के। रन भूमि०। चरखेका चक्र चलाओ है जो मील फोल गिरावो अट्टन कहता अब सब छोड़ आलसी बान के। रनभूमि में आन के ना।

कजली नं० १४ दुरमुनियां।

हिन्दू मुसलमां ईसाई सबको देत दोहाई, मोरे भारत के लाल, मिल जुल कीजे देशी का प्रचार॥ टेक०॥ चरखा चक्र चलाओ, घर घर अपनी दाल गलावो, मोरे भारत के लाल, गांधी जी के ए हैं बिमल बिचार। मिल०। अपने हाथ बनाओ, वोके पहिनों वो पहिनावो, मोरे भारत के लाल, दर दर खोलो देशी कारो बार। मिल०। कल की कला हटाओ, जेमें रुपया रोज बचावो; मोरे भारत के लाल, अपनो अपनो बाबू मती सुधार। मिल०। उठो बीर बरबंका, फूको वस्त्र बिदेशी लंका, मोरे भारत के लाल, वाय काट के डंका दे ललकार। मिल०। छोड़ गुलामी गीरी, गोरी को मुँह कर दो पीरी मोरे भारत के लाल अट्टन जल्दी भेजो सिन्धू पार॥ मिल०॥

कजली नम्बर १५।

लन्दनी बस्त्र की होरी राम, करि दे दुलहा सावन में। । टेक। बिनी बिलायत की सारी मोर, लेइजा चूनर चोली राम॥ कर दे०॥ फेशन के ऊपर मरना छोड़ो, खद्दर के लो मोली राम,। कर दे०। बसन बिदेशी से धन जाता, भर भर प्यारे झोली राम,॥ कर दे०॥ अट्टन यों उपदेश देत हैं ग्राम नगर की टोली राम॥ लन्दनी बस्त्र की होली राम कर दे दुलहा सावन में।